युवा-बहनों का आह्वान

(बी.के.सुमन, अलीगंज, लखनऊ)

कलियुग के अन्त में हर चीज़ की अति हो जाती है, हर बुराई अपने चरम सीमा को पार कर रही है, कहीं दहेज का दानव, कहीं अहम् की आग, कहीं अत्याचार का आतंक, कहीं अपहरण का तूफान, कहीं वहसियत का भूत, कहीं हैवानियत की राक्षस, कहीं भेदभाव की दीवार, कहीं रूप-रंग का दावानल, नित्य कितनों को लीलता है कितनों को वे मौत मार रहा है, कितनों को जीते जी मार रहा है, कितनों को तिल-तिल कर मार रहा है, कितनों को जिन्दा लाश बना दे रहा है, कितनों को जिन्दा जलाया जा रहा है। किसी को तेजाब पिलाया जा रहा है, किसी को सरे राह उठाया जा रहा है। कौन रोकेगा इस जलजले को, कौन बनेगा रहनुमा, कब आयेगा मसीहा, कैसे होगा चमत्कार, खौफनाक खतरों से कितनों को बचाया जा सकता है ? कितनों को दी जा सकती है सुरक्षा ? जिनसे सुरक्षा की आश लगाये बैठे हैं वही निगलने को तैयार बैठे हैं - कहीं कोई बाप का शिकार, कहीं भाई का प्रतिकार, कहीं पति की प्रताड़ना, कहीं परिवार की ज्यादतियां, कहीं पड़ोसियों का उत्पीड़न, कहीं बॉस की मनमानी, कहीं किसी का तो कहीं किसी का शिकार लड़की को बनना ही पड़ता है। न कोई सुकून की जगह, न कोई विश्वास पात्र, जिसके साथ सदा के लिए सुरक्षित एवं चैन से रहा जा सके। कब किसके मन में भूत सवार हो जाये कुछ पता नहीं। इतनी मजबूर, लाचार, बेबस, असहाय, गरीब, अनाथ बहनों पर अत्याचार, अन्याय और शोषण होते देख क्या तुम्हारे मन में कोई संकल्प नहीं चलता, एक असहाय लड़की की करुण कथा सुनकर तुम्हारे मन में क्या कोई दया रहम नहीं आती ? एक चचेरे भाई की लालची प्रवृत्ति के कारण उसको पागल घोषित करवाकर उसे हॉस्पिटल में डलवा देता है, बाद में उसकी छोटी बच्चियों की भी जिन्दगी खराब करता, उसका बाप ऐसी दारुण दशावाली बहन की करुण कथा पर क्या तुम्हारा जरा भी दिल नहीं पसीजता ? 23 वर्ष की बहन 2 वर्ष की शादी, 1 वर्ष की बच्ची, दहेज की अन्धी पट्टी बांधकर उसे दो गिलास तेजाब पिलाया, जिन्दगी मौत के बीच दो दिन संघर्ष फिर मौत... क्या तुम्हें इस कहानी में कोई दर्द नहीं दिख रहा ? 12 वर्षों से ये पिता ने बच्ची को नज़रबंद करके रखा उसके 6 बच्चे ऐसे वहसियों को कौन सजा दे रहा है, अगर उन्हें सजा कुछ मिली भी तो भी क्या उनका वह जीवन, वह खुशी, स्वच्छ जीवन क्या दुबारा मिल पायेगा ? कई बच्चियाँ तो इस खौफनाक मंजर से गुजरने के बाद अपनी आवाज ही खो बैठती है अंतर्मन की चेतना खोकर गुम-सुम हो मनुष्य को देखकर ही भयभीत हो उठती है क्या तुम्हें उनकी आह की चीत्कार सुनाई नहीं देती ? घर-घर में भेद भाव की दीवार, 21वीं सदी भी इस मजबूत दीवार को तोड़ नहीं पाई। जगह-जगह होर्डिंग्स लगे हैं बिटिया की शादी बेटे की पढ़ाई, घर के छोटे-छोटे काम या पढ़ने, लिखने, खाने-पीने, पहनने घूमने में भेदभाव आज जर्रे-जर्रे में व्यापक हो चुका है हर घर की ये कहानी है। जब अपनी लड़की में भेदभाव है तो पराये घर से आई हुई लड़की के साथ कितना ईमानदारी से व्यवहार होगा ? कोई कोई को पैदा होने पर मार दिया जाता है, कोई को पैदा होने के पहले ही गर्दन मरोड़ दी जाती

है। राजस्थान के एक गांव 100 वर्ष बाद बरात आई, 100 वर्ष तक उस गांव में किसी लड़की को जिन्दा नहीं रहने दिया गया। कहीं कोई उबाल कर खा रहा है तो कहीं कोई अंग काट-काटकर फ्रिज में रख देता है यह अत्याचार, पापाचार यह बेरहमी आखिर कब तक सहन करती रहोगी।

कोई काम के नहीं है, कोई काम नहीं, दिन भर घूमना, शराब पीना, घर आकर पत्नी को मारना, हुकुम चलाना, तानाशाही झाड़ना, बच्चों की कोई खबर नहीं, घर है या नहीं, कोई फिकर नहीं, बच्चों को पालना पत्नी का काम, पैदा करना पुरुष का काम। कुछ गल्ती की पकड़े गये सन्यासी बन गये, घर छोड़कर चले गये, घर की जिम्मेवारी से मुक्त, 6 छोटे-छोटे बच्चे कौन करेगा उनकी परवरिश ? वह, जिसे 2500 साल से अबला कहते आये ? जिसने कभी खेती देखी नहीं, धन्धा धोरी जानती नहीं, बच्चों को क्या बनाये, कैसे बनाये कुछ रास्ता नहीं दिख रहा। बेचारी माँ दया की देवी, वह तो बच्चों को छोड़कर नहीं जा सकती वह किसी भी बच्चे का दुख नहीं देख सकती, उसे तो किसी-न-किसी रीति से पालना ही है पर कैसे चला पायेगी मजबूरी की गाड़ी को ? बहनों तुम उठा सकती हो यह बीड़ा, क्या तुम्हारे मन में इनके प्रति कोई करुणा नहीं जाग्रत होती यह सब तो अपने को बन्धन व दायरे में बंधा हुआ महसूस कर रही है, पर तुम तो निर्बन्धन हो तुम्हें क्यों ख्याल नहीं आता, कि ये जंग हमारी भी है इनके अन्याय से हम लड़ेंगे, बहनों अन्याय करना जितना बड़ा अपराध है! अन्याय सहन करना उससे भी बड़ा अपराध है यह अन्याय को बढ़ावा देना है तुम्हारे सामने किसी लाचार, बेबस पर अत्याचार होता रहे और तुम चुपचाप देखती रहोगी, अपनी माँ बहनों पर हो रहे अत्याचार को तुम्हारे सिवाए कोई और नहीं समझ सकता इसलिए अब कोमलता व नाजुकता के काली सुरंग से बाहर निकलो, जाग्रत करो अपनी सुषुप्त शक्तियों को, उतार फेंको अबला के ठप्पे को और दिखा दो अपना असली रूप, जिससे दहल उठे संसार, भयभीत हो जाये आतंकी, तुम कब तक सोती रहोगी और कब तक मुंह मोड़ती रहोगी और कब तक भागती रहोगी इन सच्चाईयों से अगर तुम घूम कर खड़ी नहीं होगी तो यह एक दिन तुम्हें भी अपनी चपेट में लेने वाली हैं। सुरसा के मुंह की तरह फैली ये विकृतियाँ किसी को छोड़ने वाली नहीं, अगर इनको रोका नहीं गया तो पूरा ही हप कर जायेगी, इसलिए बहनों अब गफलत मत करो, जागो और जगाओ अपने स्वमान को, कहीं देर न हो जाये। संसार जल रहा है, मानवता चीख रही है, नैतिकता तड़फ रही है, आध्यात्मिकता अन्तिम सांसे ले रही है, समाज दहक रहा है और तुम कहाँ फैशन में व्यस्त हो, जबान के टेस्ट में मस्त हो, कहाँ शोर शराबे की पार्टियों में त्रस्त हो रही हो ? फैशन की आंधी में क्यों अपनी असली सुन्दरता को उड़ा दे रही हो ? असली सुन्दरता को तो छोड़ और ही मुसीबतों को दावत दे रही हो ? जबान के स्वाद में नित् नई बीमारियों को बुला रही हो और देर रात तक चलने वाली पार्टियों में आधुनिकता का लिबास पहन हो हल्ला मचाते नित् नये खतरों को तैयार कर रहे हैं ? जिन खौफनाक खतरों से पार पाना संभव ही नहीं। उनमें खत्म हो जाना होता है इसलिए मेरी

बहनों, एक बार इस मायावी चम्बे से बाहर निकल कर तो देखो। करने को जिन्दगी में बहुत कुछ है, करिश्मा या कारनामा न भी करो पर करने योग्य कर्म तो अवश्य करो।

समय की बेवसी, वक्त की पुकार, प्रकृति की चेतावनी, माया की चुनौती, भगवान का आह्वान तुम्हें सचेत कर रहा है कि रूकना ठीक नहीं, तुम्हें कुछ करना ही होगा। छोड़ो गलतफहमियाँ, मौज मस्तियां, अब समय है अपनी शक्ति को सार्वजनिक करने का, अन्याय का सामना करने का, चेतावनी को चुनौती देने का, ध्वस्त कर दो हर बुराई के बीज को, परास्त करो हर उस दुश्मन को जो रास्ते का रोड़ा बना हुआ है, बहादुरी व पराक्रम का मूल्यांकन कर्मक्षेत्र एवं युद्ध क्षेत्र में ही होता है। चलो समर के बीच कूद पड़ो रणभूमि में, तुम्हें अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी, विजय भी तुम्हारी ही होगी, वह बचकर तुमसे कहीं नहीं जा सकती क्योंकि कलयुग के अन्त में जब चारों और माया का बोल बाला हो, पाप सिर पर चढ़कर बोल रहा हो, बुराइयों का हर मन पर संपूर्ण आधिपत्य हो गया हो, भक्ति सिर्फ आड़म्बरों व कर्मकाण्डों में उलझकर दिखावे मात्र रह गयी है। जब सच्चाई बेइमानी लग रही हो, आधुनिकता भौतिकता हर दिल की गहराई में उतर गई हो, आध्यात्मिकता जहाँ दीनता व असहायों का हथियार माना जाने लगा हो, वहाँ पर कुमारी की पूजा होती हो, सौ ब्राह्मणों से उत्तम एक कुमारी का गायन हो, हर काम की शुरुवात पवित्र कन्या से करवाना, जहाँ शुभ माना जाता हो, तो सोचो कन्या कितनी शक्तिशाली होगी, कितनी वैल्युबुल हो, परन्तु हाय तुम नहीं जानती कि तुम क्या हो ? काश हीरे को अपनी वैल्यु का पता होता, बहनों अपनी अपार उर्जा को पहचानों, अपनी विशेषताओं का मूल्यांकन खुद करो, समझो अपनी योग्यताओं को, तुम साधारण नहीं हो, तुम शक्ति का अवतार हो, उर्जा का रूप हो, तुम्हारे साथ स्वयं भगवान है, उसने बहनों पर विश्वास करके विश्व-परिवर्तन का कार्य दिया है। भगवान जानी जाननहार है, तुम यह काम कर सकती हो, तुममें वह शक्ति है भगवान ने पहचान करके ही आह्वान किया है लेकिन तुम्हारा मन इस मायावी नगरी की चकाचौंध में चक्कर न खा जाये। तुम्हें सैकड़ों प्रलोभन देने आयेंगे पर तुम्हें वास्तविकता पता करनी होगी। कहीं मुम्बई माया नगरी का आकर्षण खीचेंगा, परन्तु उसकी सच्चाई जान लो, पैसा व शोहरत अच्छी बात है परन्तु चरित्र व सदाचार से बढ़कर कुछ नहीं, ऐसे पैसे व पद को लात मार मुंह मोड़ लेना चाहिए। शोहरत मिले न मिले पर शोहबत ठीक होनी चाहिए, धन हो या न हो पर चैन हो। मदर टेरेसा की पहचान विश्व के कोने-कोने में बच्चे-बच्चे की जुबान पर है उन्होंने किसी कपड़े व प्रदर्शन से नाम नहीं कमाया करुणा ओर दया रूपी गुणों से सारे विश्व में ममता का डंका बजा दिया। गार्गी, पन्ना धाय, अपाला, दुर्गावती, लक्ष्मीबाई, जीजाबाई, मीरा ये भी तो नारियां ही थी सैकड़ों वर्षों बाद भी आज इनकी छवि धूमिल नहीं हुई। एक्ट्रेसेस का जमाना केवल दो-चार वर्षों का होता है वह भी सभी लोग उनको किस नज़रिये से देखते हैं और उनसे आगे लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा ये भी तो नारियाँ ही थी जिन्हों ने अनेक गंदे मन को स्वच्छ बना दिया, उनकी शालीनता देखिये, कोई कपड़ों के आधार पर उनकी सुन्दरता

नहीं मापी गयी। हजारों साल बाद भी इनकी सुन्दरता कायम है। इनकी तरफ एक बार नज़र घुमा के तो देखो तुम्हारा मन भी सुन्दर हो जायेगा। सुन्दरता तो मन की होती है अगर कोई बहुत सुन्दर मुखाकृति वाला हो पर उसका व्यवहार अच्छा न हो तो उसके नज़दीक कोई नहीं जाना चाहता, उसे कोई सुन्दर नहीं कहता। ऐसी सुन्दर बनो जिसकी सुन्दरता सदियों तलक चलें।

दूसरा आकर्षण - धन का। इसकी चमक भी कम नहीं है। इसकी चकाचौंध तो आकण्ठ तक भी धन से सराबोर होने पर सन्तुष्टता नहीं और जहाँ सन्तोष नहीं वहाँ सुख कहाँ। धन कमाना कोई बुरी बात नहीं। धन के बिना हमारा जीवन ठीक तरीके से सुचारु रूप से नहीं चल पाता परन्तु धन की लालसा एक नया दलदल बनाता है। जिससे निकलना सम्भव ही नहीं पर नामुमकिन होता है। लक्ष्मी, धन की देवी मानी गयी है। धन कमाने वाले भाई लोग उनसे धन की याचना करते हैं परन्तु वह कोई नौकरी तो करती नहीं थी, कुबेर को धन का देवता कहा जाता है वह कोई नौकरी तो नहीं करते थे, यहाँ किसी ने कितना भी धन कमाया हो पर किसी और को भी धन की प्राप्ति कराये, ऐसा नहीं होता है। पर धन की देवी के लिए तो सभी मानते हैं कि वह दूसरों को भी धनवान बनाती है। क्यों नहीं तुम भी ऐसा धनी बनो जो कभी कम ही न पड़े। दूसरों को भी सम्पन्न बना दो इसलिए बहनों भगवान के आह्वान को तुरंत और सहर्ष स्वीकार कर आ जाओ मैदान-ए-जंग में। कन्या सौ ब्राह्मणों से उत्तम कहलाती है लेकिन कन्या माना पवित्र, वह कन्या ब्रह्माकन्या है जो भगवान बनाता है जिसे ब्रह्माकुमारी कहते हैं इसलिए बहनों चलो भगवान की मत पर, तुम अपना तो क्या सारे विश्व का उद्धार कर सकती हो, खुशी का निर्मल-निर्झर झरना बन अनेकों को खुशी से सराबोर कर सकती हो, पावनता की बहती नदी बन, अनेकों के पाप धो सकती हो। प्रकाश का स्तम्भ बन अनेकों का तिमिर हर जीवन को रोशनमय कर सकती हो। ऊर्जा का प्रतिबिम्ब बन अनेक बुझते दीपों को शक्ति की एक किरण दे सकती हो, शान्ति का अनन्त श्रोत बन हर मन को सच्ची शान्ति दे सकोगी। गुणों की गरिमा से सम्पन्न बन अनेकों जीवन में जीवंत खुशबू भर सकोगी। करुणा और दया की प्रतिमूर्ति बन उनके निखरते जीवन को सद्मार्ग का रास्ता दे सकोगी। शीतलता की निश्चल चांदनी बन अनेकों के तपते मन को राहत-रूह दे सकोगी। प्रेम का विमलसिन्धु बन अनेकों तड़फते एवं तरसते दिलों को स्नेहिल छांव दे सकोगी। क्या तुम्हें ऐसा जीवन पसंद है या फिर शादी कर सिर्फ एक व्यक्ति के पल्लू से बंध कर उसके चरणों की दासी बनकर हर उल्टी-सीधी बात को हाँजी हाँजी कर स्वीकार कर उसकी भक्ति (सेवा) में लगे रहना या फिर शेरनी बन अपनी बुराइयों का तो दमन कर पावन बन अनेकों को भी बुराइयों से मुक्त करने में उनका मार्गदर्शक बनना अच्छा है! क्यों किसी गुलामी की जंजीरों में स्वयं को जकड़ना, स्वच्छंद हो अपनी उर्जा को सर्व के हित सदुपयोग करना, न कि अपनी मुक्ति के लिए समाज या सरकार या भगवान से फरियाद करना। भगवान भी फरियाद से छुड़ाने आया है वह अपनी सारी शक्तियाँ देकर अपने जैसा सर्वशक्तिमान बनाकर विश्व नव-निर्माण के कार्य में सहयोगी बना फिर अधिकारी बनाने आया है। क्या उसकी यह पेशकश तुम्हें स्वीकार नहीं। तुम्हारे सामने ये रास्ता भी स्पष्ट है फैसला तुम्हें करना है, तुम अपनी जिन्दगी को कोहिनूर बनाना चाहती हो या बेनूर ?